परमात्म ऊर्जा

आजकल के कहलाने वाले महात्माओं ने तो आप महान आत्माओं की कॉपी की है। तो ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें कहाँ भी, किसी रीति झुक नहीं सकती। वे झुकाने वाले हैं, न कि झुकने वाले। कैसा भी माया का फोर्स हो लेकिन झुक नहीं सकते। ऐसे माया को सदा झुकाने वाले बने हो कि कहाँ-कहाँ झुक करके भी देखते हो? जब अभी से ही सदा झुकाने की स्थिति में स्थित रहेंगे, ऐसे श्रेष्ठ संस्कार अपने में भरेंगे तब तो ऐसे हाइएस्ट पद को प्राप्त करेंगे जो सतयुग में प्रजा स्वमान से झुकेगी और द्वापर में भिखारी हो झुकेंगे। आप लोगों के यादगारों के आगे भक्त भी झुकते रहते हैं ना। अगर यहाँ अभी माया के आगे झुकने के संस्कार समाप्त न किये, थोड़े भी झुकने के संस्कार रह गये तो फिर झुकने वाले झुकते रहेंगे और झुकाने वालों के आगे सदैव झुकते रहेंगे। लक्ष्य क्या रखा है, झुकने का व झुकाने का? जो अपनी ही रची हुई परिस्थिति के आगे झुक जाते हैं- उनको हाइएस्ट कहेंगे? जब तक हाइएस्ट नहीं बने हो तब तक होलीएस्ट भी नहीं बन सकते हो। जैसे आपके भविष्य यादगारों का गायन है सम्पूर्ण निर्विकारी। तो इसको ही होलीएस्ट कहा जाता है। सम्पूर्ण निर्विकारी अर्थात् किसी भी परसेन्टेज में कोई भी विकार तरफ आकर्षण न जाए व उनके वशीभूत न हो। अगर स्वप्न में भी किसी भी प्रकार विकार के वश किसी भी परसेन्टेज में होते हो तो सम्पूर्ण निर्विकारी कहेंगे? अगर स्वप्नदोष भी है व संकल्प में भी विकार के वशीभूत हैं तो कहेंगे विकारों से परे नहीं हुए हैं। ऐसे सम्पूर्ण पवित्र व निर्विकारी अपने को बना रहे हो व बन गये हो? जिस समय लास्ट बिगुल बजेगा उस समय बनेंगे? अगर कोई बहुत समय से ऐसी स्थिति में स्थित नहीं रहता है तो ऐसी आत्माओं का फिर गायन भी अल्पकाल का ही होता है। ऐसे नहीं समझना कि लास्ट में फास्ट जाकर इसी स्थिति को पा लेंगे। लेकिन नहीं। बहुत समय जो गायन है- उसको भी स्मृति में रखते हुए अपनी स्थिति को होलीएस्ट और हाइएस्ट बनाओ। कोई भी संकल्प व कर्म करते हो तो पहले चेक करो कि जैसा ऊंचा नाम है वैसा ऊंचा काम है? अगर नाम ऊंचा और काम नीचा तो क्या होगा? अपने नाम को बदनाम करते हो? तो ऐसे कोई भी काम नहीं हो - यह लक्ष्य रखकर ऐसे लक्षण अपने में धारण करो। जैसे दूसरे लोगों को समझाते हो कि अगर ज्ञान के विरूद्ध कोई भी चीज़ स्वीकार करते हो तो ज्ञानी नहीं अज्ञानी कहलाये जायेंगे। अगर एक बार भी कोई नियम को पूरी रीति से पालन नहीं करते हैं तो कहते हो ज्ञान के विरूद्ध किया। तो अपने आप से भी ऐसे ही पूछो कि अगर कोई भी साधारण संकल्प करते हैं तो क्या हाइएस्ट कहा जायेगा? तो संकल्प भी साधारण न हो। जब संकल्प श्रेष्ठ हो जायेंगे तो बोल और कर्म ऑटोमेटिकली श्रेष्ठ हो जायेंगे। ऐसे अपने को होलीएस्ट और हाइएस्ट, सम्पूर्ण निर्विकारी बनाओ। विकार का नाम निशान न हो।

कथा सरिता

एक आखिरी प्रयास

एक समय की बात है। एक राज्य में एक प्रतापी राजा राज करता था। एक दिन उसके दरबार में एक विदेशी आगंतुक आया और उसने राजा को एक सुन्दर पत्थर उपहार में दिया। राजा वह पत्थर देख बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उस पत्थर से भगवान विष्णु की प्रतिमा का निर्माण कर उसे राज्य के मंदिर में स्थापित करने का निर्णय लिया और प्रतिमा निर्माण का कार्य राज्य के महामंत्री को सौंप दिया।

महामंत्री गाँव के सर्वश्रेष्ठ मूर्तिकार के पास गया और उसे वह पत्थर देते हुए बोला, "महाराज मंदिर में भगवान विष्णु की प्रतिमा स्थापित करना चाहते हैं। सात दिवस के भीतर इस पत्थर से भगवान विष्णु की प्रतिमा तैयार कर राजमहल पहुंचा देना। इसके लिए तुम्हें 50 स्वर्ण मुद्रायें दी जायेंगी।" 50 स्वर्ण मुद्रायें सुनकर मूर्तिकार खुश हो गया और महामंत्री के जाने के उपरांत प्रतिमा का निर्माण कार्य प्रारंभ करने के उद्देश्य से अपने औज़ार निकाल लिए। अपने औज़ारों में से उसने एक हथौड़ा लिया और पत्थर तोड़ने के लिए उस पर हथौड़े से वार करने लगा। किंतु पत्थर जस का तस रहा। मूर्तिकार ने हथौड़े के कई वार पत्थर पर किये, किंतु पत्थर नहीं टूटा।

पचास बार प्रयास करने के उपरांत मूर्तिकार ने अंतिम बार प्रयास करने के उद्देश्य से हथौड़ा उठाया, किंतु यह सोचकर हथौड़े पर प्रहार करने के पूर्व ही उसने हाथ खींच लिया कि जब पचास बार वार करने से पत्थर नहीं टूटा, तो अब क्या टूटेगा। वह पत्थर लेकर वापिस महामंत्री के पास गया और उसे यह कह वापस कर आया कि इस पत्थर को तोड़ना नामुमकिन है। इसलिए इससे भगवान विष्णु की प्रतिमा नहीं बन सकती। महामंत्री को राजा का आदेश हर स्थिति में पूर्ण करना था। इसलिए उसने भगवान विष्णु की प्रतिमा निर्मित करने का कार्य गाँव के एक साधारण से मूर्तिकार को सौंप दिया। पत्थर लेकर मूर्तिकार ने महामंत्री के सामने ही उस पर हथौड़े से प्रहार किया और वह पत्थर एक बार में ही टूट गया। पत्थर टूटने के बाद मूर्तिकार प्रतिमा बनाने में जुट गया। इधर महामंत्री सोचने लगा कि काश,पहले मूर्तिकार ने एक अंतिम प्रयास और किया होता, तो सफल हो गया होता और 50 स्वर्ण मुद्राओं का हकदार बनता।

सीख : हम भी अपने जीवन में ऐसी परिस्थितियों से दो-चार होते रहते हैं। कई बार हम एक-दो प्रयास में असफलता मिलने पर आगे प्रयास करना छोड़ देते हैं। लेकिन जीवन में सफलता प्राप्त करनी है तो बार-बार असफल होने पर भी तब तक प्रयास करना नहीं छोड़ना चाहिए, जब तक सफलता नहीं मिल जाती।

दिल्ली-कृष्णा नगर। ब्रह्माकुमारीज़ के विश्वास नगर स्थित गीता पाठशाला में महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य संचालक ब्र.कु. हरीश भाई, कृष्णा नगर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अनु दीदी, मंच संचालक ब्र.कु. मंजू दीदी, मुख्य वक्ता ब्र.कु. सुनीता दीदी,पानीपत, डीसीपी ईस्ट, एसीपी,शाहदरा, एसएचओ, निगम पार्षद सहित अनेक गणमान्य लोग शामिल रहे।

ऋषिकेश-उत्तराखंड। ब्रह्माकुमारीज़ के नवनिर्मित सेवाकेन्द्र 'तपस्या धाम' का रिबन काटकर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. मंजू दीदी, महामंडलेश्वर स्वामी असंगानंद जी महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी विजयानंदपुरी जी महाराज, ब्र.कु. आरती दीदी, ब्र.कु. शारदा दीदी तथा अन्य।

गया-ए.पी. कॉलोनी(बिहार)। शिव जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. श्री प्रकाश, राजकुमार अग्रवाल, विजय कुमार अरोड़ा,जेल सुपरिंटेंडेंट, सुशीला डालमिया, कौशलेंद्र प्रताप सिंह,चेम्बर ऑफ कॉमर्स, विनोद धनुका,चेम्बर ऑफ कॉमर्स, राजयोगिनी ब्र.कु. रुक्मणि दीदी, ब्र.कु. आशा बहन,माउण्ट आबू, ब्र.कु. संगीता बहन, ब्र.कु. सुनीता बहन सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

सिकंद्रा-पुखरायां(उ.प्र.)। ईश्वरीय ज्ञान चर्चा के पश्चात् पुलिस अधीक्षक,सी.ओ. प्रिया सिंह को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. कोमल बहन व ब्र.कु. आरती बहन।

मोकामा-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में निःशुल्क मधुमेह जाँच शिविर के दौरान लैब टेक्नीशियन उत्तम कुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. निशा बहन। साथ हैं होम्योपैथिक दवाओं के थोक विक्रेता राजेन्द्र कुमार।

झोझूकलां-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में 'परमात्मा शिव द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए सकारात्मक परिवर्तन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में पंचायत समिति झोझूकलां की वाइस चेयरमैन उषा रानी जी, ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. वसुधा बहन, जिला पार्षद निशा रानी जी, ग्रामीण विकास मंडल महिला प्रेरक एवं पंचायत समिति सदस्य कविता जी, सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्र.कु. नीलम बहन सहित अन्य महिलायें व ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

चरखी दादरी-हरियाणा। 'मेरा भारत व्यसन मुक्त भारत' अभियान के तहत आयोजित यात्रा को हरी झंडी दिखाते हुए नगर परिषद अध्यक्ष बक्शी सैनी, एच.सी. नरेश कुमार हरियाणा नारकोटिक्स ब्यूरो चरखी दादरी व भिवानी, हेड ऑफ ईसीएचएस कर्नल किशन सिंह तथा ब्रह्माकुमारीज़ की जिला प्रभारी ब्र.कु. प्रेमलता बहन।